1. दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.
2. हिंदी विभाग
3. 3 rd year (III year)
4. 5 sem
5. मेजर पेपर
6. हिंदी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल)
7. paper code : HHINCT-1301
8. डॉ. शिवकांता रामकिशन सुरकुटे
हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर
मो. नं - 7776989158

पाठ्यक्रम

1.0 – आदिकाव्य

1.1 = आदिकाव्य का सामान्य परिचय
1.2 = आदिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ
1.3 = रासो एवं जैन साहित्य का सामान्य परिचय
1.4 = सिद्ध एवं नाथ साहित्य का सामान्य परिचय.

2.0 – भक्तिकाव्य

2.1 = संत काव्य की प्रवृत्तियाँ
2.2 = सूफी काव्य की प्रवृत्तियाँ
2.3 = राम- भक्ति काव्य की प्रवृत्तियाँ
2.4 = कृष्ण- भक्ति काव्य की प्रवृत्तियाँ

3.0 रीतिकाव्य

3.1 = रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
3.2 = रीतिबद्ध काव्य का सामान्य परिचय
3.3 = रीतिसिद्ध काव्य का सामान्य परिचय
3.4 = रीतिमुक्त काव्य का सामान्य परिचय

4.0 – प्रतिनिधि कवि

4.1 = अमीर खुसरो
4.2 = संत नामदेव
4.3 = संत मीराबाई
4.4 = कवि भूषण

Page No. 1
Date

1.1 आदिकाल का सामान्य परिचय

→ हिंदी साहित्य का आदिकाल आचार्य शुक्ल के अनुसार संवत 1050 वि. से लेकर संवत 1375 वि. तक अर्थात महाराजा भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक माना जा सकता है। आदिकाल हिंदी साहित्य का प्रथम काल है जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'आदिकाल' नाम दिया है।

(1) आदिकाल का नामकरण :—

1. वीरगाथाकाल — आचार्य रामचंद्र शुक्ल (युद्ध एवं वीरता के कारण)
2. चारणकाल — डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन
3. आदिकाल — डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

(2) आदिकाल की पहचानें :—

1. ऐतिहासिकता का अभाव :—

रासो साहित्य के चरित्र नायक ऐतिहासिक व्यक्ति है इन काव्य-ग्रंथों में ऐतिहासिकता का रक्षा नहीं की गयी है। इन ग्रंथों में तथ्य कम है, कल्पना अधिक है। परिणामतः अनेक ऐतिहासिक भ्रांतियां उत्पन्न हुई है। चारण कवियों ने अतिशयोक्ति का प्रयुक्ता देते हुए काल्पनिक वर्णन किए हैं यहां कारण है कि इन ग्रंथों में ऐतिहासिकता का अभाव है।

(3) युद्ध-वर्णन में सजीवता :—

कवि युद्ध का आंखों देखा हाल सुना रहे है। चारण कवि कलम के धनी थे नहीं तलवार के भी धनी थे। अवसर पड़ने पर

अपने-अपने आश्रयदाता के साथ रणक्षेत्र में जाकर तलवार के हाथ भी दिखाते थे। युद्ध के दृश्यों का उन्होंने अपनी आँखों से देखा था इन युद्ध वर्णनों में जो कुछ भी कहा गया है वह उनकी अपनी वास्तविक अनुभूति है।

(3) वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता :—

युद्धों का वर्णन होने से वीर रस की योजना इनमें अनायास ही हो गई है। पृथ्वीराज रासो में ऐसे अनेक मर्मस्पर्शी स्थल हैं जहाँ वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। युद्ध शौर्य-प्रदर्शन के लिए तथा सुंदर राजकुमारियों से विवाह करने के निमित्त लड़े जाते थे। श्रृंगार रस के भावपूर्ण वर्णनों का समावेश भी इन काव्य ग्रंथों में हो गया है। राजकुमारियों के स्वाभिमान सौन्दर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन नख-शिख परिपाटी पर किया है।

(4) आश्रयदाताओं की प्रशंसा :—

दरबारी कवि होने के कारण इन कवियों ने आश्रयदाता के शौर्य, यश, वैभव का काल्पनिक अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। पृथ्वीराज रासो एवं खुमाण रासो इसी कोटि की प्रशंसापरक काव्य रचनाएं हैं। नायक को राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन से भी श्रेष्ठ बताते हुए प्रत्येक दृष्टि से उनकी महत्ता प्रतिपादित की है।

(5) कल्पना की प्रचुरता :—

चारण कवियों की रचनाएं तथ्य परक न होकर कल्पना प्रधान है। इतिहास नाममात्र को ही है। कवियों ने कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं, नामावलियों एवं तिथियों तक की कल्पना कर ली है। इन रासो काव्यों में संभावना और कल्पना पर अधिक बल दिया गया है।

(3)

(3) आदिकाल के कवि एवं रचनाएं

1. पृथ्वीराज रासो — चंदबरदाई
2. बीसलदेव रासो — नरपति नाल्ह
3. पद्मावत रासो — जगनिक आदि
4. हम्मीर रासो — दलपति विजय

(4) आदिकाल की परिस्थितियां :—

(A) राजनीतिक :—

राजनीतिक काल युद्ध का काल था। हर्षवर्धन की मृत्यु पश्चात देश खंड में विभाजित हो गया था। सब राजा युद्ध में ही रहते थे। कभी-कभार शांति प्रदान करने के लिए भी युद्ध छेड़ा जाता था। विदेशी आक्रमणकारी का यह के राजा किसी विरोध नहीं कर पाए है। महमद गजनवी — 10 वीं शती और मुहम्मद गौरी — 12 वीं शती में भारत में आक्रमण किया था। धीरे-धीरे मुसलमानों का अधिकार हो गया। राजा की संकुचित राष्ट्रीयता थी जो विदेशी आक्रमणकारियों का आगमन हो गया।

(B) धार्मिक :—

आदिकाल में अनेक धर्मों का आगमन हो चुका था। बौद्ध धर्म, जैन धर्म का, सिद्ध, नाथों का भी आगमन हो चुका था। जनता की समझ में नहीं आ रहा था की किस धर्म पर चले। सिद्ध संप्रदाय चमत्कार प्रदर्शन करने की अशिक्षित जनता पर तंत्र-मंत्र-टोना प्रभाव डाल रहे थे। बाद में नाथ संप्रदाय का आगमन हो चुका था। सिद्ध संप्रदाय का पुरा विरोध कर रहे थे। इन्द्रिय योग पर दिया और बाह्याडम्बरों का जुलकर विरोध किया।

Page No. 4
Date

(C) सामाजिक :—

जनता पूरी अशिक्षित थी। तंत्र-मंत्र का प्रभाव लोगों पर था। महामारी समाज में फैल रही थी। युद्ध का संकट हमेशा रहता था। ग्रह-कलह हमेशा रहता था। स्त्रियों का भोगविलास के रुप में देखा जाता था। समाज में सतीप्रथा थी। राजकुमारी का विवाह स्वयंवर द्वारा होता था। राजा रजवाड़ियों में जाति रहती थी। सामाजिक जीवन में पूरी अशांति रहती थी।

(D) साहित्यिक :—

आदिकाल में सबसे पहले संस्कृत भाषा थी। भामह, दंडी, रुद्रट, भवभूति जो संस्कृत के आचार्य कवि थे उन्होंने कविता, ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा है। उसके बाद प्राकृत, अपभ्रंश और जन भाषा में आदिकाल साहित्य लिखा गया। उसके बाद हिंदी में कविता लिखी जाने लगी। हिंदी के कवियों ने आश्रयदाताओं का अनुरोध पूर्ण अपनी कविता के माध्यम से किया है।

(E) सांस्कृतिक :—

हर्षवर्धन के समय — सांस्कृतिक परिस्थिति का विकास हो चुका था। मगर बाद में मुसलमानों का आक्रमण हो जाने से मंदिर-मठ नष्ट कर दिए गए। उत्सव, मेला, आहार, मनोरंजन, कला, आदि पर मुसलमानों का प्रभाव पड़ने लगा। गायन-वादन पर भी प्रभाव पड़ने लगा था। इस तरह सांस्कृतिक परिस्थिति ह्रास उन्मुख थी।

Page No. 5
Date

(5) **नाथ साहित्य :—**

नाथों की संख्या नौ है। नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येंद्रनाथ एवं गोरखनाथ माने गये हैं। नाथों का समय 12वीं शती से 14 वीं शती तक है। हिंदी संतकाव्य पर इनका पर्याप्त प्रभाव है। गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को नारी से दूर रहने का उपदेश दिया। कबीर साहित्य में उपलब्ध नारी विरोध इसी का परिणाम है।

(6) **सिद्ध साहित्य :—**

वज्रयानियों को सिद्ध कहा गया है। राहुल सांस्कृत्यायन ने सिद्धों की संख्या 84 बताई है। ये लोग अपने नाम के पीछे पा, जोड़ते थे। जैसे — सरहपा, सबरपा, लुइपा, कण्हपा आदि। 7वीं 8वीं शती में सिद्धों का समय माना जाता है।

(7) **जैन साहित्य :—**

जैन साहित्य अपभ्रंश भाषा में लिखा गया है। 1. संदेश रासक — अब्दुल रहमान
2. महापुराण — पुष्पदंत
3. परमात्म प्रकाश — जोइन्दु. आदि

आदिकाल हिंदी साहित्य का आरंभ काल है। आदिकाल में किसी भी तरह का विकास नहीं हो पाया था। समाज आदिकाल के वातावरण से ग्रस्त था। युद्धमय वातावरण होने राजा-महाराजा अपने में ही व्यस्त रहते थे। अपना जीवन विलासितापूर्ण जीते थे। समाज में सामाजिक विषमता फैली हुई थी। अनेक धर्म का आगमन हो चुका था। विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत में पर आक्रमण किया था। यहां पर अपना आधिपत्य निर्माण किया।

(11)

Page No.
Date

1.3 रासो साहित्य का सामान्य परिचय

→ हिंदी साहित्य के आदिकाल में राजाओं के यश, शौर्य और युद्धों का वर्णन करनेवाले वीर-गाथात्मक काव्य को 'रासो काव्य' कहा जाता है। इन ग्रंथों के रचयिता कवियों को रासो कवि कहा जाता है। जिनमें चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो, ~~परमाल~~ जगनिक — परमाल रासो ग्रंथ प्रमुख हैं।

(I) प्रमुख रासो कवि और रचनाएँ :—

(1) चंदबरदाई = पृथ्वीराज रासो ग्रंथ लिखा, जो हिंदी का पहला महाकाव्य माना जाता है। इसमें पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन है।

(2) जगनिक — इन्होंने परमाल रासो (आल्हा खंड) की रचना की जिसमें महोबा के वीर आल्हा और ऊदल की लड़ाइयों का वर्णन मिलता है।

(3) शार्ङ्गधर — हम्मीर रासो — की रचना की जिसमें हमीरदेव चौहान और अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध का वर्णन है।

(4) दलपति विजय — इन्होंने खुमाण रासो ग्रंथ की रचना की।

(II) रासो साहित्य की विशेषताएँ

(1) वीर रस की प्रधानता :—

रासो काव्य मुख्यतः वीर रस में ही लिखा है। इनमें राजाओं और सामंतों की वीरता, साहस तथा युद्ध कौशल का प्रमुखता से चित्रण हुआ

(2) आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा :—

इन ग्रंथों के रचयिता चारण कवि थे जो राजदरबारों में रहते थे। कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के यश, शौर्य और ऐश्वर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

(3) इतिहास और कल्पना का समन्वय :—

इन रचनाओं का आधार ऐतिहासिक घटनाएँ या पात्र रहे हैं, परंतु काव्य को रोचक बनाने के लिए कवियों ने उनमें कल्पना का भारी संमिश्रण किया है, जिससे ये शुद्ध इतिहास न रहकर प्रबंध काव्य बन गए हैं।

(4) युद्ध और शृंगार का सुंदर प्रयोग :—

युद्धों के साथ-साथ इनमें शृंगार रस का भी सहज समावेश मिलता है। कई जगहों पर नायिकाओं के सौन्दर्य और प्रेम-प्रसंग को युद्ध का कारण या मुख्य उपजीव्य बनाया गया है।

(5) डिंगल-पिंगल भाषा :—

रासो ग्रंथों में मुख्य रूप से डिंगल (राजस्थानी + अपभ्रंश) और पिंगल (ब्रजभाषा + अपभ्रंश) भाषा का प्रयोग मिलता है।

(6) विविध छंदों का प्रयोग :—

इन काव्यों में छप्पय, दोहा, तोमर, गाहा और कुण्डलिया जैसे अनेक छंदों का कलात्मक उपयोग देखने को मिलता है।

(13)

Page No.
Date

જૈન સાહિત્ય નો સામાન્ય પરિચય :—

પ્રાચીન હિંદી અને અપભ્રંશ સાહિત્ય માં સ્વયંભૂ, પુષ્પદંત અને જોઇંદુ જેસે મહાન જૈન કવિયોં ને ધર્મ, દર્શન અને કથાસાહિત્ય કો અનમોલ ખજાના રચા જૈન સાહિત્ય કી મુખ્ય વિશેષતાએં ઉપદેશાત્મકતા, અહિંસા અને નૈતિકતા કા પ્રધાન, લોકભાષાઓં કી પ્રધાનતા (પ્રાકૃત, અપભ્રંશ, શૌરસેની), ચરિતકાવ્ય કી વહુલતા કા આદિ હૈ।

આદિકાલ કે પ્રમુખ જૈન કવિ :—

1. **સ્વયંભૂ** – 'પઉમ ચરિઉ' (રામકથા) કે પ્રસિદ્ધ રચયિતા।
2. **પુષ્પદંત** :— 'મહાપુરાણ' કે રચનાકાર।
3. **જોઇંદુ** — 'યોગસાર' કે રચનાકાર।
4. **આગસુ** — 'ચંદનબાલા રાસ' કે રચયિતા

આદિકાલીન સાહિત્ય કી વિશેષતાએં :—

1. ઉપદેશાત્મકતા :—

રચનાઓં કા મુખ્ય ઉદ્દેશ્ય જનમાનસ કો વૈરાગ્ય, સદાચાર અને ધર્મ કે માર્ગ પર લગાના હૈ। ઇન લોગોં કા જૈન ધર્મ કે પ્રતિ આસ્થા અને ઉસકા પ્રચાર હૈ।

2. અહિંસા ધર્મ :—

સાહિત્ય કે કેંદ્ર મેં અહિંસા, સત્ય, અપરિગ્રહ, અને સંયમ કા સંદેશ હૈ।

3. लोकभाषा का प्रयोग :—

आम जनता तक बात पहुंचाने के लिए संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी, गुजराती, कन्नड जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाया गया।

4. कर्म सिद्धांत —

सुख-दुःख और पुनर्जन्म के कारणों यानी कर्मबंधन व उसकी मुक्ति (मोक्ष) का स्पष्ट वर्णन है।

5. विषय की विविधता :—

जैन साहित्य धार्मिक होने के बावजूद सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक विषयों के साथ ही लोकआख्यानों की नई कथाओं का अपनाया है। रामायण, महाभारत संबंधी कथाओं को भी जैन कवियों ने अपनाया है।

6. यथार्थ चित्रण :—

जैन कवि राजाश्रित नहीं थे। राजाश्रय का दबाव और दरबारी अतिरंजना से इनकी रचनाएँ मुक्त है। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में तत्कालीन स्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है। आदिकालीन आचार-विचार, समाज, धर्म, राजनीति आदि को जानने के लिए ये रचनाएँ पर्याप्त है।

7. कर्मकांड, रुढ़ियों, परंपराओं का विरोध :—

1. पूजा-पाठ, उपासना, रुढ़ियों का विरोध
2. तीर्थ, मूर्ति, वेष, जाति, वर्ण, मन्त्रों को नहीं मानते
3. मन की शुद्धता पर बल
4. [illegible]

1.4 सिद्ध साहित्य का परिचय

(→) बौद्ध धर्म की दो शाखाएं हो गई थी - हीनयान और वज्रयान। वज्रयानियों को ही सिद्ध कहा गया है। राहुल सांकृत्यायन ने 84 सिद्धों की संख्या बताई है। ये लोग अपने नाम के पीछे 'पा' जोड़ते थे। जैसे - सरहपा, लुइपा, सबरपा, डोम्भिपा आदि। 7 वीं - 8 वीं शती में सिद्धों का समय माना जाता है। कुछ प्रमुख सिद्ध और उनकी कृतियां इस प्रकार है:

1: प्रमुख सिद्ध कवि :—

(1) सरहपा — 'दोहाकोश' ग्रंथ की रचना की। 'सरहपाद' नाम से भी जाना जाता है।

(2) शबरपा — 780 ई. का जन्म माना जाता है। 'चर्यापद' ग्रंथ की रचना की है।

(3) लुइपा — शबरपा के शिष्य है। उनकी किसी ग्रंथ का उल्लेख नहीं मिलता।

(4) डोम्भिपा : — विरुपा के शिष्य थे। 'डोम्बिगीतिका' ग्रंथ की रचना की थी।

(5) कण्हपा : — 820 ई. का जन्म कुला था। 74 ग्रंथों की रचना की थी।

(6) कुक्कुरिपा : — 16 ग्रंथों की रचना की थी।

सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ :—

1. धर्म और समाजसुधार :—

रूढ़ियों, बाह्य आडंबरों, जाति-प्रथा और वर्ण-व्यवस्था का जड़ा विरोध किया। धर्म के इन्होंने समाज में सुधार लाने का प्रयास किया है।

2. नंम साधना और योग :—

हठयोग, वज्रयान और नंम-मंत्र साधना पर विशेष बल दिया।

3. सहज जीवन और देहवाद :—

शरीर को ही साधना का केंद्र मानकर सहज जीवन व महासुखवाद पर बल

4. भाषा का रूप :—

अपभ्रंश से जुड़ी आरंभिक हिंदी का प्रयोग सिद्ध साहित्य में मिलता है।

5. गुरु की महत्ता :—

ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु के उपदेश महत्वपूर्ण है। गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलेगा। ज्ञान नहीं मिलेगा तो ज्ञानबुद्ध नहीं होगी।

6. रहस्यवाद :—

प्रतीकात्मक तथा दृष्टकूट शैली में रचित चर्यापद।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सिद्ध साहित्य की भाषा जनभाषा थी उन्होंने गुरु का महत्व दिया था सिद्धों की संख्या 84 बताई जाती है।

नाथ साहित्य का सामान्य परिचय

नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथों का समय 12वीं शती से 14वीं शती तक है तथा सांख्य पर इनका पर्याप्त प्रभाव है। डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ की रचनाओं का संकलन गोरखबानी नाम से किया है। गोरखनाथ की रचनाओं में गुरु महिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण साधना, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण एवं शून्य समाधि का वर्णन है। गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को नारी से दूर रहने का उपदेश दिया। कबीर साहित्य में उपलब्ध नारी विरोध इसी का परिणाम है।

(1) नाथों की संख्या :—

नाथों की संख्या नौ है
(1) मत्स्येन्द्रनाथ (2) गाहनीनाथ (3) ज्वालेंद्रनाथ
(4) जलंधरनाथ (5) नागनाथ (6) रेवणनाथ
(7) भर्तृहरिनाथ (8) चर्पटनाथ (9) गोपीचंद्रनाथ

(2) उत्पत्ति और पृष्ठभूमि :—

1. सिद्धों का खंडन :— पूर्ववर्ती सिद्ध साहित्य में व्याप्त भोग प्रवृत्ति और मादिरा, मांस आदि का नाथों का कड़ा विरोध किया है।

(2) शिव और आदिनाथ :—

नाथ संप्रदाय के मूल प्रवर्तक आदिनाथ (शिव) माने जाते है। नौ नाथों ने इस पंथ को आगे बढ़ाया।

(3) क्षेत्र :—

इसका मुख्य प्रभाव क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश) रहा।

(3) नाथ साहित्य की विशेषताएँ

(1) हठयोग साधना :—

इसमें 'ह' (सूर्य) और 'ठ' (चंद्र) के योग से मन को साधने और कुंडलिनी जागरण पर बल दिया गया।

(2) गुरु महिमा :—

गुरु के बिना ज्ञान मिलता नहीं है। नाथ पंथ में ईश्वर प्राप्ति और साधना की सफलता के लिए गुरु को सर्वोपरि माना गया है।

(3) आचरण की शुद्धता :—

इसमें ब्रह्मचर्य, संयम, नैतिक आचरण पर ज़ोर दिया गया तथा नारी को साधना में बाधक माना गया।

(4) नारी के सावधान :—

नारी से दूर रहने का संदेश नाथों ने दिया है। नाथ में लिप्त होने

को साधना नहीं होगी। सिद्धों ने नारी को मुक्ति और कुछ भी साधना नहीं कर सके। नारी भक्ति में बाधा बन सकती है।

(5) भाषा-शैली :—

इनकी भाषा अपभ्रंश से प्रभावित पुरानी हिंदी थी, जिसमें अलंकारों के बजाय उपदेशात्मकता और रीढ़ापन था।

(6) रूढ़ियों और बाह्य आडम्बरों का खण्डन :—

नाथ संप्रदाय में तंत्र-मंत्र, जादू टोना, बाह्य आडम्बरों का विरोध किया है। इन बाह्य आडम्बरों के कारण बुद्ध संप्रदाय में कमजोरियाँ निर्माण हो चुकी है। इन सभी बातों का विरोध नाथ संप्रदाय में हुआ है।

(4) मुख्य सिद्धांत :—

शरीर आत्मा की शुद्धि के लिए योग, ध्यान और ब्रह्मचर्य को महत्व दिया जाता है।

(5) मुख्य ग्रंथ :—

गोरक्षबानी, हठयोग प्रदीपिका और सिद्ध सिद्धांत पद्धति आदि ग्रंथ प्रमुख है।

निष्कर्ष कहा जा सकता है कि नाथों की संख्या नौ है। नाथों की सबसे बड़ी कमजोरी गृहस्थ के प्रति अनादर भाव है। यह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है। नाथ पंथ में गुरु को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

प्रकरण = 2

2.1 = संत काव्य की प्रवृत्तियाँ / विशेषताएँ

→ संत रूपी परम तत्व का साक्षात्कार कर लेनेवाले व्यक्ति को संत कहा जाता है। जो आत्मोन्नति एवं लोकमंगल में रत रहता है वह संत है। आज हिंदी साहित्य में निर्गुणोपासक ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को संत कहा जाता है। कबीर, रैदास, नानक, दादु दयाल, मलुकदास आदि संत कवि हैं। इनके लिखे साहित्य का उद्देश्य समाजसुधार और ईश्वर की सहज प्राप्ति।

1. **संतकाव्य भावप्रधान :—**

संत काव्य भाव-प्रधान है, कला प्रधान नहीं। वह ताजमहल की कुशल काटीगरी न होकर रम्य पर्वत श्रेणियों की भांति सहज सुंदर है।

2. **कविता साधन मात्र :—**

संत कवियों का कविता करना उद्देश्य नहीं था। कविता साधन मात्र थी। कविता के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं को अभिव्यक्त करना उद्देश्य था।

3. **कवि निर्गुणोपासक :—**

वे ईश्वर को निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अविनाशी एवं सर्वव्यापी मानते हैं। कभी-कभी वे इस निर्गुण को राम, गोविंद, हरि आदि नामों से भी पुकारते हैं।

4. **ज्ञान की महत्ता :—**

यह ज्ञान वेद-पुराणों या कुरान से नहीं, अपितु चित्त की निर्मलता एवं हृदय की पावनता से

प्राप्त किया जाता है। ज्ञान दशा में ही ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है। विवेक युक्त ज्ञान दृष्टि ही व्यक्ति को अज्ञान, अंधविश्वास एवं पाखण्ड से मुक्त करता है। ज्ञान की आग जब माया के जल में लगती है तो विषय-वासना का कीचड़ नष्ट हो जाता है।

5) गुरु की महत्ता :—

संत काव्य में गुरु की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उसे ईश्वर से भी बड़ा दर्जा दिया गया है। गुरु ही ब्रह्मा का साक्षात्कार कराता है, वही ज्ञान-नेत्र खोलता है। गुरु की प्रतिष्ठा इन्होंने नाथपंथ से ग्रहण की।

6. बाह्याडम्बरों का खंडन :—

संत कवियों ने बाह्याडम्बरों का खण्डन किया। मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, व्रत, रोजा, नमाज में इन्हें कोई विश्वास न था। हिंदू-मुसलमान दोनों के इन्होंने अंधविश्वासों, रूढ़ियों के प्रति फटकारा। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, संयम, सदाचार को मानव के लिए आवश्यक मानते हैं।

7. जाति-प्रथा का विरोध :—

ऊँच-नीच, छुआछूत एवं वर्णाश्रम व्यवस्था को अभिशाप मानकर इन्होंने निर्भीकता से इनका खण्डन किया। ब्राह्मण वर्ग इनके आक्रोश का शिकार बना।

8. नारी विषयक दृष्टिकोण :—

संत कवियों का नारी विषयक दृष्टिकोण असंतुलित है। वे नारी को नरक का

दूर या माया का प्रतिरूप मानते हैं। नारी की निंदा करते हुए वे नारी का विष की बेल नहीं कहते हैं। नारी विषयक दृष्टिकोण नाथपंथ से संत कवियों के पास आया है।

9 **नामस्मरण पर बल :—**

संत कवियों ने ईश्वर के नामस्मरण पर विशेष बल दिया है। पांडित्य और आडंबर मुक्त भक्ति ही ईश्वर को प्राप्त करने में सहायक होती है। भक्ति में प्रेम का सर्वाधिक महत्व है। आंतरिक रूप से नाम स्मरण करते रहना ही वास्तविक भक्ति की पहचान है। संत कवि रामनाम को ही मुक्ति का एकमात्र आधार मानते हैं।

10 **रहस्यवाद :—**

रहस्यवाद में भावना है, जो ईश्वर की अज्ञात सत्ता को जानने की इच्छा से उत्पन्न होती है। संत कवि कबीर हिंदी साहित्य के महान रहस्यवादी कवि स्वीकार किए जाते हैं। रहस्यवादियों की तरह कबीर की आत्मा भी परमात्मा के प्रेम में तड़पती रहती है। यह विरहणी आत्मा और परम ईश्वर के दर्शन को तरसती है तथा उसके विषय में जानने की जिज्ञासा रखती है।

(11) **माया से सावधान :—**

सभी संत कवियों ने माया से सावधान रहने की चेतावनी दी है। यह ईश्वर की भक्ति और उपासना में बाधा का काम करता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि माया के पाँच पुत्र हैं जो भक्त के राह में अवरोध ~~उत्पन्न~~ उत्पन्न करते हैं।

12 **માનવતા :—**

સંત સમાજ में व्याप्त ऊँच-नीच और भेदभाव को नहीं मानते थे। वे सब इंसानों को एक समान मानते थे और मानवता को ही सबसे बड़ा धर्म कहते थे।

13 **सधुक्कड़ी भाषा :—**

સંત ઘુમક્કડ સ્વભાવ ના થે, इसलिए उनकी भाषा में कई बोलियों के शब्द मिलते हैं। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी कहा जाता है, जो आम लोगों को आसानी से समझ आती थी।

14 **રસ :—**

સંતકાવ્ય में शांत रस की प्रधानता है। शृंगार रस का पुट, परियाप्त भी उसमें हुआ है। कहीं कहीं उत्तरवर्ती में अद्भुत रस भी है।

15 **અલંકાર :—**

સંતકાવ્ય में अलंकारों का प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन के लिए न होकर भावों के उत्कर्ष के लिए हुआ है। उनमें अनायास ही उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास का समावेश हो गया है।

નિષ્કર્ષતઃ कह या सकता है कि संत काव्य में गुरु का महत्व है, इन्होंने कविता के माध्यम से कुरीतियों का विरोध किया है अपने साहित्य की भाषा सधुक्कड़ी अपनायी है।

दयानंद कला महाविद्यालय

पद्यव्युत्तर - ६

अंतर्गत चाचणी पर्व .....

वर्ग..... .....

हजेरी क्र..... .....

दिनांक..... .....

राम-भक्ति काव्य की विशेषताएँ

OR

2.3 रामकाव्य की विशेषताएँ / प्रवृत्तियाँ -

→ रामकाव्य के केंद्र में तुलसीदास जी है। उनका ग्रंथ 'रामचरितमानस' हिंदू धर्म, संस्कृति, आचार-विचार का मापदंड बन गया है। यह ग्रंथ जितना लोकप्रिय हुआ है, उसकी कोई समता नहीं है। रामकाव्य परंपरा के प्रमुख कवि होने से हम तुलसी को ही केंद्र मानकर रामकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण करेंगे।

(1) राम का स्वरूप :—

तुलसी के राम विष्णु के अवतार है। दशरथ पुत्र के पुत्र राम धर्म की स्थापना के लिए अवतार लिया है। और अधर्म का विनाश करने के लिए। 'रामचरितमानस' के राम शक्ति, शील, सौन्दर्य के भंडार है। राम सबके लिए अनुकरणीय है। राम एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा के रूप में है। राम लोकरक्षक है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम है। अनंत सौन्दर्य से सबको मोहित कर लेते है।

(2) भक्ति का स्वरूप :—

राम भक्ति शाखा के कवियों ने राम के प्रति दास्य-भाव की भक्ति-भावना प्रदर्शित की है। वे स्वयं को सेवक और 'राम' को अपना आराध्य मानते है। तुलसी के 'रामचरितमानस' में दास्य भाव की भक्ति को मुक्ति का साधन माना है। तुलसी की भक्ति में नवधा भक्ति भी है।

PAGE No.
DATE

(3) समन्वयवादी प्रवृत्ति :—

तुलसी के समय में समाज में अनेक प्रकार के वाद चलते रहते थे। धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा के नाम पर आए दिन संघर्ष होते रहते थे। समन्वय तत्कालीन युग की आवश्यकता थी। 'रामचरितमानस' में समन्वयवादी प्रवृत्ति का परिचय दिया है। सगुण और निर्गुण, शैव और वैष्णव को, ज्ञान और भक्ति, राजा और प्रजा का समन्वय किया है।

(4) मूल्य-बोध :—

रामभक्त कवियों का उद्देश्य केवल काव्य रचना करना ही नहीं था। वे जितने उच्चकोटि के कवि थे उतने ही उपदेशक भी थे। उनकी रचनाएं जनता के एक बहुत बड़े वर्ग को जीवन के नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी देती है। राम के चरित्र द्वारा आदर्श उपस्थित किए हैं — एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, राजा आदि के रूप में राम को प्रस्तुत किया है।

(5) नारी विषयक दृष्टिकोण :—

तुलसी ने सीता, पार्वती, अनुसूया जैसी नारियों के उज्ज्वल चरित्र की परिकल्पना करते हुए नारी को सती, पतिव्रता एवं त्यागमय रूप में प्रस्तुत कर उनकी गरिमा एवं भव्यता प्रदान की है।

(6) प्रबंध रचना :—

तुलसी का 'रामचरितमानस' इस काव्य परंपरा का अन्यतम महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त प्राणचंद चौहान ने — रामायण महानाटक, लालचंद — अवध विलास, हृदयराम ने — हनुमन्नाटक प्रबंध काव्य लिखे हैं।

PAGE No.
DATE

(7) विविध काव्य-शैलियां :—

रामभक्त कवि विविध काव्य शैलियों में पारंगत थे।
रामचरितमानस — दोहा-चौपाई शैली
कवितावली — कवित्त-सवैया शैली
विनयपत्रिका — पद-शैली
हनुमन्नाटक (हृदयराम) - संवाद-शैली

(8) रस-योजना :—

इनके काव्यों में नवरसों का परिपाक उपलब्ध होता है। 'रामचरितमानस' के युद्ध वर्णन में वीर एवं रौद्र रसों की सुंदर योजना हुई है। पुष्प-वाटिका में राम-सीता का प्रथम मिलन एवं शृंगार वर्णन मिलता है।

(9) अवधी भाषा का प्रयोग :—

रामकाव्य की प्रमुख रचना अवधी भाषा में हुई है। 'रामचरितमानस' की रचना भी अवधी भाषा में हुई है। नाभादास कृत — अवध-विलास, ईश्वरदास कृत — भरत मिलाप आदि रचनाएं अवधी भाषा में लिखी गई है। तुलसी की अवधी साहित्यिक संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग और पूर्णतः व्याकरण सम्मत अवधी भाषा है।

(10) छंद एवं अलंकार योजना :—

'रामचरितमानस' में दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छंदों का सफल प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त संस्कृत के छंदों का प्रयोग हुआ है। तुलसी का काव्य अलंकारों से मण्डित है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि उनके प्रिय अलंकार है।

(11) आदर्श चरित्रों का चित्रण :—

रामकाव्य में आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श सेवक (हनुमान) जैसे उच्च आदर्श चरित्र प्रस्तुत किए गए हैं। जो समाज के लिए नैतिक मार्गदर्शक का काम करते हैं।

(12) लोकहित की भावना :—

इन काव्यों का मुख्य उद्देश्य समाज को संगठित करना और नैतिक मूल्य स्थापना था। तुलसीदास जैसे कवियों ने लोककल्याण को अपने साहित्य का केंद्र बनाया।

(13) जन-जीवन के कवि :—

रामकाव्य की परंपरा के कवि सही अर्थ में जन कवि हैं। किसी राजा के आश्रय में रहकर उसकी खुशामद में ये काव्य नहीं लिखे गए हैं यही कारण है कि इनके काव्य जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये कवि विनीत और विनम्र हैं। इनका रचना लोकरक्षा के लिए हुई है।

(14) युगीन समस्याओं का चित्रण :—

युगीन समस्याओं के भयंकर परिणाम बताकर पाठकों को उन्हें दूर करने के लिए उकसाया भी गया है। उन समस्याओं में से कुछ समस्याएं आज भी प्रासंगिक हैं। सगुण-निर्गुण द्वंद्व है। हिंदुओं की उपासना पद्धति।

निष्कर्षतः कह जा सकता है भक्तिरस से सराबोर इन कवियों की वाणी ने जनता को आशा, उत्साह एवं स्फूर्ति का संदेश दिया। तुलसी का रामचरितमानस राजा से रंक तक के घरों में विराजमान है। इनका उच्चकोटि का साहित्य ही कारण भक्तिकाल को स्वर्णकाल कहा जाता है।

...के इस काल के कवियों के लिए सहज अनुकूल हुआ है तथा ...पूर्वी काव्य धारा। इस काल के कवियों ने लोकगाथाओं को ...काव्य का विषय बनाया और लोक तत्व के द्वारा ईश्वर ...को समाज बनाया है।

मुख्य सूफी कवि एवं उनकी रचनाएं

सूफी प्रेमाख्यानकों में सर्वप्रथम रचना है—मुल्ला दाऊद ...चंदायन (लिकता रचनाकाल 1370 ई. बताया जाता है। ...सूफी प्रसिद्ध सूफी कवि कुतुबन है जिनकी रचना का नाम ...है—मृगावती। इस ग्रन्थ का रचनाकाल 1501 ई. है। सूफी ...प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा में सर्वश्रेष्ठ है—जायसी तथा इनका ...प्रसिद्ध ग्रन्थ है—पद्मावत। इस ग्रन्थ की रचना 947 हिजरी सन् (1540 ई.) में की गई थी। इसके अतिरिक्त इनके दो ग्रन्थ और ...हैं—अखरावट एवं आखिरी कलाम। मंझन कृत मधुमालती का भी ...सूफी प्रेमाख्यानों में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अतिरिक्त ...उस्मान ने चित्रावली, शेखनबी ने ज्ञान दीप एवं नूर मोहम्मद, ...कासिम ने मजलिस और अलाउल इंसाई तथा शेख निसार ...ने यूसुफ जुलेखा नामक प्रेमाख्यान लिखी है। प्रमुखतया सूफी ...कवियों के अतिरिक्त हिन्दू कवियों ने भी प्रेमगाथाएं लिखी हैं। ...इनमें उल्लेख है—ईश्वरदास कृत सत्यवती कथा तथा दुःखहरण ...नाम कृत पुरुषोत्तम।

सूफी काव्य की प्रवृत्तियां

सूफी प्रेमाख्यानकों की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :

1. **मुसलमान कवि एवं मसनवी शैली**—सूफी काव्यधारा के अधिकांश कवि मुसलमान हैं, परन्तु उनमें धार्मिक कट्टरता का अभाव है। इन सूफी कवियों ने सूफी मत का प्रचार-प्रसार करने के लिए हिन्दुओं के घरों में प्रचलित प्रेम कहानियों को अपने काव्य का विषय बनाया। जायसी ने पद्मावत में जिस प्रेमकथा को लिया है वह राजा रत्नसेन और राजकुमारी पद्मावती की ऐतिहासिक प्रेमगाथा है। इन्होंने चरित काव्यों को मसनवी शैली में प्रस्तुत किया। इस शैली के अन्तर्गत वे प्रथम ईश्वर वन्दना (हम्द) तत्पश्चात् हजरत मुहम्मद की स्तुति (नअत), मुहम्मद साहब के चार मित्रों की प्रशंसा (मनकबत) और फिर शाहे वक्त (तत्कालीन शासक) की प्रशंसा (मदह) की जाती है। इसके बाद गुरु महिमा का निरूपण करने के साथ-साथ अपनी आत्मा और धार्मिक विश्वासों की विवेचना भी की जाती है। हिन्दू कवियों द्वारा भी कुछ प्रेमाख्यानक लिखे गए हैं, परन्तु उनमें इस पद्धति का अनुसरण नहीं किया गया है।

2. **प्रेमगाथाओं का नामकरण**—सूफी कवियों ने प्रेमगाथाओं का नामकरण प्रायः नायिका के आधार पर किया है। उदाहरण के लिए जायसी कृत पद्मावत का नामकरण इसकी नायिका पद्मावती के नाम पर है तो मंझन कृत मधुमालती तथा कुतुबन कृत मृगावती नायक रत्नसेन का नायकाख्यान भी नायिका के नाम को आधार बनाकर किया गया है। कुछ सूफी रचनाएं भी हैं जिनमें नायिका के साथ ही साथ कथा क्षेत्र (स्थान) का भी उल्लेख किया गया है, यथा—मधुमालती कथा। इन कथाओं में नायिका को ईश्वरीय अवतार (जोगिनि) और अवतार (कौआनी) के अन्तर्गत लिखाया गया है। ये सभी कथा आ केवल हिन्दू की नहीं हैं अपितु इसके आधार पर किया गया नामकरण विभाजन उपयुक्त नहीं कहा जा सकता है।

3. **अलौकिक प्रेम की व्यंजना**—प्रेमगाथा काव्य परम्परा के अधिकांश कवियों ने लौकिक प्रेमकथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। राजा रत्नसेन एवं पद्मावती के लिए प्रेम का उल्लेख 'पद्मावत' में किया गया है वह इसी प्रकार का है। यहां रत्नसेन आत्मा का प्रतीक है और पद्मावती परमात्मा का प्रतीक, अतः रत्नसेन के हृदय में जो उत्कट लालसा पद्मावती से मिलन के लिए है उसे आत्मा की परमात्मा के प्रति मिलन की अभिलाषा ही समझा जाना चाहिए। अलौकिक प्रेम की इस व्यंजना के कारण सूफी कवियों की रचनाओं में रहस्यवाद का समावेश हो गया है। पद्मावत में कथा के बीच-बीच में ऐसे अनेक संकेत दिए गए हैं, जो पद्मावती को परमात्मा का प्रतीक समझने के लिए बाध्य करते हैं। समासोक्ति और अन्योक्ति के कारण पद्मावत में दूसरे अर्थों की व्यंजना करने वाले अनेक प्रसंग देखे जा सकते हैं। कवि ने इन प्रसंगों की योजना अलौकिक प्रेम की व्यंजना करने के लिए ही की है। उदाहरण के लिए पद्मावती के नख-शिख चित्रण में उसकी देह पद्धिनी की शोभा का वर्णन करते समय संसार के सभी पदार्थों में उस ज्योति को दिखा दिया गया है :

तेहि सरि गगन दिपहिं उजरे जोती।
रतन पदारथ मानिक मोती॥

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूफी कवियों के काव्य में पाई जाने वाली रहस्यवादी प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए इसे भावात्मक कोटि का रहस्यवाद स्वीकार किया है—"यदि कहीं सच्चे भावात्मक रहस्यवाद के दर्शन होते हैं, तो जायसी आदि सूफी कवियों में।"

4. **कथा-संगठन एवं कथानक रूढ़ियां**—सूफी कवियों के प्रेमाख्यानक प्रबन्ध काव्य हैं, जिनमें कथा तत्व का समावेश है। इन प्रबन्ध काव्यों की कथा स्रोत भारतीय पुराण, इतिहास एवं अन्य लोक प्रचलित प्रेम कहानियां हैं। इन कवियों ने जिन प्रेमगाथाओं का वर्णन किया है, वे प्रायः एक ही ढांचे में ढली हुई हैं। कथावस्तु में अपेक्षित गति न होकर शिथिलता है। वस्तु वर्णन की प्रधानता होने के कारण कथा प्रवाह में व्यवधान पड़ा है तथा कहीं कहीं नीरसता भी आ गई है। कथावस्तु में अलौकिकता एवं रोमांचक घटनाओं की अधिकता भी दिखाई पड़ती है।

इस कविता में कवयित्री ने आधुनिक एवं ऐतिहासिक कथानक कविताओं का समन्वय किया है। इस रेखाचित्रों में उसने ऐतिहासिक कथानक कविता किस प्रकार से की है। इसका विवेचन किया है। इसी कथानक कविता में उसने ऐतिहासिक कथानकों में वातावरण तैयार किया है। इसमें [illegible] के इतिहास के [illegible] का वर्णन किया है। इसमें [illegible] के [illegible] का वर्णन किया है। इसमें [illegible] के [illegible] का वर्णन किया है। इसमें [illegible]

[illegible] भी वृद्धि नहीं हो पाती।" सूफी कवियों के द्वारा अतिशयोक्तिपूर्ण शैली में किया गया यह वस्तु वर्णन उनके काव्य का एक दुर्बल पक्ष ही माना जाएगा।

9. **खण्डन-मण्डन का अभाव**—सूफी कवियों ने किसी विशेष सम्प्रदाय का खण्डन मण्डन नहीं किया। सन्त कवियों में जहां यह प्रवृत्ति उग्र थी, वहीं सूफियों में इसका अभाव था। इन कवियों ने सूफी मत का प्रचार करने के लिए प्रेमगाथाओं की रचना अवश्य की किन्तु कहीं पर भी किसी अन्य धर्म या सम्प्रदाय के विरुद्ध एक भी बात नहीं कहीं। इन्होंने अपने मत का प्रचार करने के लिए काव्य की सरसता का सहारा लिया जिसके कारण हिन्दुओं में भी ये काफी लोकप्रिय कवि हुए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूफी कवियों की इस विशेषता को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"प्रेम स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।" सच्चे अर्थों में सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं के द्वारा प्रेम के सार्वभौमिक स्वरूप की स्थापना की।

10. **काव्य रूप**—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूफी प्रेम गाथाओं को फारसी की मसनवी शैली में रचित काव्य ग्रन्थों के अन्तर्गत माना है। उनके अनुसार ईश वन्दना, शाहे वक्त का उल्लेख, कथा का सर्गों में विभक्त न होना तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ में एक ही छन्द का प्रयोग आदि ऐसी विशेषताएं हैं जिनके कारण इन्हें मसनवी रचनाएं कहा जाना उपयुक्त है जबकि कुछ अन्य विद्वानों ने उनके मत को अस्वीकार किया है। इनमें प्रमुख हैं डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त। इनके अनुसार इन्हें कथा-काव्य कहा जाना उचित है।

सूफी कवियों के ये प्रेमाख्यानक प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत आते हैं, क्योंकि इनमें एक सानुबन्ध कथा की योजना की गई है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने सूफी कवियों के काव्य रूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"सूफी प्रेमाख्यानक एक ऐसी रचना है जिसमें किसी प्रबन्ध काव्य के प्रायः सभी तत्व विद्यमान हैं, किन्तु जिसमें इसके साथ ही कथा आख्यायिका, जैन चरित काव्य एवं मसनवी की भी विशेषताओं का समन्वय हो गया है और यही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है।"

प्रबन्ध काव्यों में वर्णनात्मकता के लिए दोहा-चौपाई शैली सर्वथा उपयुक्त है। सूफी कवियों ने इसी 'कड़वक' शैली को अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया है।

11. **भाषा एवं अलंकार योजना**—सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। जायसी ने पद्मावत में जिस अवधी का प्रयोग किया है, वह ठेठ ग्रामीण अवधी है, अतः उसमें वैसी साहित्यिकता एवं संस्कृत निष्ठता दिखाई नहीं पड़ती जो तुलसी की भाषा में विद्यमान है। जायसी की भाषा में अवधी के लोक प्रचलित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का समावेश भी हुआ है। जायसी की भाषा की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि मुसलमान होते हुए भी उनकी भाषा में अरबी-फारसी की अपेक्षा संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों की बहुलता

12) पतीकात्मकता :

जायसी ने अपने पद्मावत में पतीक के माध्यम से पात्र को प्रस्तुत किया है
यथा
1. चित्तौड़ — शरीर
2. रत्नसेन — मन
3. पद्मावती — बुद्धी
4. नागमती — संसार
5. हीरामन तोता — गुरु
6. अल्लाउद्दीन — माया

13) विरह-भावना की प्रधानता :—

जायसी निर्गुण काव्यधारा के सूफी शाखा के प्रमुख कवि हैं। चित्तौड़ का राजा रत्नसेन सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती का सौन्दर्य वर्णन हीरामन तोते से सुना और उसको प्राप्त करने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करके उसे प्राप्त कर लेता है।

14) गुरु का महत्व :—

गुरु का महत्व हर युग में है। हर काव्यधारा में है। गुरु ही व्यक्ति को मार्ग दिखाता है। गुरु के कारण ही व्यक्ति को मोक्ष मिलता है। 'पद्मावत' हीरामन तोता एक गुरु के रूप में आया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इन रचनाओं में प्रेम के गंभीर, उदात्त एवं भव्य रूप का गरिमापूर्ण चित्रण हुआ है, जिससे इन्हें हिंदी साहित्य

कृष्ण काव्य की प्रवृत्तियाँ

कृष्ण काव्य की रचना प्रायः उन भक्त कवियों के द्वारा की गई है, जो किसी न किसी सम्प्रदाय से जुड़े हुए थे, अतः कृष्णकाव्य में एकरूपता दिखाई नहीं पड़ती। कृष्ण लीला का गान तो प्रायः इन सभी कवियों के द्वारा किया गया, परंतु राधा-कृष्ण के विषय में उनकी अपनी धारणाएँ एवं मान्यताएँ रही हैं, जो उनके सम्प्रदाय विशेष के अनुसार थीं। युगीन परिस्थितियों ने भी कृष्ण काव्य को किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित किया है। वल्लभाचार्य जी ने तत्कालीन मुस्लिम शासकों के अत्याचारों से पीड़ित समाज की दुर्दशा के सन्दर्भ में एकमात्र श्रीकृष्ण को ही शरण स्थल के रूप में स्वीकार किया। सूफियों के प्रेम तत्व को देखकर कृष्ण भक्त आचार्यों ने अपनी भक्ति भावना में माधुर्य भाव का समावेश कर उसे जनता के लिए आकर्षक बनाया। संक्षेप में कृष्णभक्ति काव्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है

1 कृष्ण-लीला का वर्णन

कृष्ण भक्त कवियों ने राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन अपने काव्य में प्रमुखता से किया है। विभिन्न सम्प्रदायों में दीक्षित इन भक्त कवियों ने श्रीकृष्ण के मधुर रूप की झांकी अंकित करते हुए उनकी बाल लीला एवं प्रेम लीला का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। मध्यकालीन कृष्णभक्त कवियों ने कृष्ण की लोकरंजनकारी लीलाओं को अपने काव्य का विषय बनाकर जनता को माधुर्य रस में आकण्ठ निमग्न कर दिया। इन्होंने कृष्ण के बाल जीवन एवं किशोर जीवन की लीलाओं का उन्मुक्त गान किया, यही कारण है कि समूचा भक्तिकालीन कृष्ण काव्य माधुर्य भाव से ओत-प्रोत है। उस समय गोपाल कृष्ण की प्रेम लीलाओं का श्रवण, चिन्तन एवं गायन कवि कर्म समझा जाने लगा था, इसीलिए भजन-कीर्तन करने वाले पद रचना करते हुए अनायास कवि बन गए। सूरकाव्य में कृष्ण की प्रेम लीलाओं का व्यापक वर्णन हुआ है। इनके अतिरिक्त चैतन्य सम्प्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के कवियों ने भी माधुर्य भाव से ओत-प्रोत कृष्ण लीलाओं का गान करते हुए काव्य रचना की। कृष्ण की प्रेम लीलाएं ही परवर्ती रीतिकालीन साहित्य में लौकिक शृंगार की प्रचुरता का कारण बनीं, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

2 प्रेमलक्षणा भक्ति

कृष्ण भक्त कवियों की भक्ति प्रेमलक्षणा भक्ति है। श्रीकृष्ण की प्रेममयी मधुर रस से ओत-प्रोत छवि को अपने काव्य का विषय बनाकर इन कवियों ने प्रेम तत्व का विशद निरूपण किया। सम्पूर्ण कृष्णकाव्य माधुर्य भाव से ओतप्रोत है। निम्बार्क सम्प्रदाय में जहां स्वकीया भाव पर बल देते हुए राधा-कृष्ण के दाम्पत्य प्रेम का चित्रण किया गया है, वहीं वैष्णव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

10. विषय वस्तु की मौलिक उद्भावना :

मध्यकाल में भगवान [illegible] आदर्श बनाने बिना आचार्य पद की पूर्ति असंभव थी। कृष्ण कवियों ने कृष्ण की बाललीला और प्रेमलीला को अपने काव्य का विषय बनाया।

11. चरित्र - चित्रण :—

कृष्णकाव्य के कवियों ने कृष्ण, राधा, गोपिकाएँ, उद्धव, नंद, यशोदा, गोकुलवासी आदि लोगों का चित्रण अपने काव्य में किया है। कृष्ण के साथ सभी पात्र जुड़े हुए हैं। इन सभी लोगों का अस्तित्व कृष्ण के कारण है।

12. सामाजिक पक्ष :—

कलियुग के प्रभाव का वर्णन करते हुए इन कवियों ने वर्णाश्रम धर्म-पतन, सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक विडम्बनाओं का चित्र प्रस्तुत किया है।

13. ऐतिहासिक पक्ष :—

मथुरा और वृंदावन में बैठे हुए कृष्ण भक्त कवि पर दिल्ली में होने राजनीतिक घात-प्रतिघातों की छाया नहीं है। किंतु इसके साहित्य में उनके अपने ढंग की ऐतिहासिकता अवश्य है। कृष्ण पर लिखना है तो उनका इतिहास कवि को मालूम होना चाहिए

दयानंद कला महाविद्यालय
पदव्युत्तर
PAGE No.
DATE
अंतर्गत बाघणी पर्व .....
वर्ग .....
हजेरी क्र. .....
दिनांक .....

पल्लव = 3

रीतिकाल की सामान्य विशेषताएँ प्रवृत्तियाँ

→ रीतिकालीन विलासी राजाओं की विलासवृत्ति को पुष्ट करने के लिए इन्हीं के शृंगार प्रधान रचनाएँ भी लिखी अतः शृंगारिकता को भी रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्तियों में स्थान दिया जा सकता है। रीतिकाल में अधिकतर कवि राजाश्रय में रहते थे आश्रयदाताओं के दान, पराक्रम आदि का अतिशयोक्ति वर्णन करने हेतु उन्हें धनप्राप्ति होती थी।

(1) **शृंगारिकता :—**

रीतिकालीन कवियों का शृंगार वर्णन एक ओर तो शास्त्रीय विधानों से युक्त है तो दूसरी ओर विलासी आश्रयदाताओं की प्रवृत्ति ने इसे उस सीमा तक पहुँचा दिया जहाँ अश्लीलता आने लगी। इन कवियों के शृंगार वर्णन में इन्द्रिय सुख की प्रधानता, लिप्सा, बाह्य सौन्दर्य की प्रधानता दिखाई पड़ती है।

(2) **आश्रयदाताओं की प्रशंसा :—**

रीतिकाल के अधिकांश कवि राजदरबारों में आश्रय प्राप्त थे तो दरबारी, की भूषण, लेशव, मतिराम आदि सभी कवि राजदरबारों से ही वृत्ति प्राप्त करते थे। सभी कवि आश्रयदाताओं की प्रशंसा में कविता करते थे।

भूषण — शिवाजी महाराज की प्रशंसा में 'शिवा बावनी' लिखा।

(3) **बहुज्ञता :** रीतिकालीन कवियों में पाण्डित्य की जो प्रवृत्ति परिलक्षित होती है, उसके कारण ये काव्य में विविध विषयक ज्ञान का समावेश करके अपनी बहुज्ञता प्रदर्शित करते थे। बिहारी के काव्य में ज्योतिष, पुराण, आयुर्वेद, गणित, कामशास्त्र, नीति, चित्रकला आदि अनेक विषयों की जानकारी समाविष्ट है।

(4) **भक्ति एवं नीति :** रीतिकाल का वातावरण विलास का था। ऐसे जर्जर मन में भक्ति उनके लिए एक मानसिक आधार थी। भक्ति का विरोध करने की ताकत उनके पास नहीं थी। रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि बिहारी की कृति 'बिहारी सतसई' में 70 दोहे भक्ति के बारे में है।

(5) **नारी भावना :** रीतिकालीन काव्य का केंद्र बिंदु 'नारी-चित्रण' रहा है। नायिका के नख-शिख चित्रण इन्होंने अधिक रुचि दिखाई है। नारी को वो भोगविलास का उपकरण मानते थे। गृहिणी, माता, भगिनी, देवी आदि रूप में नारी का चित्रण नहीं किया।

(6) **प्रकृति-चित्रण :** रीतिकाल में आलम्बन रूप में प्रकृति-चित्रण बहुत कम हुआ है आलंकारिक रूप और उद्दीपन रूप में चित्रण अधिक हुआ है। बिहारी, देव, मतिराम, भिखारीदास आदि कवियों के प्रकृति-चित्रण इसी प्रकार के है।

(7) **ब्रजभाषा की प्रधानता :**

रीतिकाल तक आते-आते ब्रजभाषा व्यापक काव्यभाषा बन चुकी थी। रीतिकालीन ब्रजभाषा, शब्द सौन्दर्य, अनुप्रासिकता, मधुरता एवं पद लालित्य के कारण काव्यभाषा के लिए पूर्ण उपयुक्त बन चुकी थी।

(8) अलंकारिकता :—

अलंकारों के रूप में सुंदर अप्रस्तुत-विधान की योजना भी की गई है। जहां कवि एकमात्र अलंकार के चमत्कार के पीछे दौड़ा है वहां तो काव्य-रूप में विकृति हो गई है। अधिकांश प्रसंगों में अलंकार अनुभूति को तीव्र करने के लिए आए हैं।

(9) वीर रस की कविता :—

दक्षिण में महाराज शिवाजी, पंजाब में गुरु गोविंद सिंह, राजस्थान में जसवंत सिंह ऐसे वीर और स्वधर्म की रक्षा के लिए औरंगजेब के साथ लोहा ले लेने को उठ खड़े हुए। अपने आश्रयदाताओं की धमनियों में अपने भावनाओं के विरुद्ध खड़े होकर सबल देकर लेने के लिए कवियों ने वीर रसात्मक कविताओं की रचना की।

उदा- भूषण, सूदन, पद्माकर कवियों ने

(10) मनोवैज्ञानिक चित्रण :—

रीतिकाल में स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों की महत्वपूर्ण चर्चा की गई है। रीतिकाल के समय में समाज में विलासिता और कामोत्तेजना की प्रवृत्तियां अधिक बढ़ चुकी थी। रीतिकालीन साहित्य यौन-विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण सामग्री जुटाता है।

(11) प्रतियोगिता की भावना :—

रीतिकालीन काव्य में कवियों के आचार्यत्व और कवित्व की प्रवृत्तियों के साथ-साथ प्रतियोगिता की भावना भी प्रबल रूप में विद्यमान है। राजदरबार में अपनी सर्वोत्कृष्टता की सिद्धि की तीव्र लालसा ने रीतिकाल के आचार्य और कवियों में प्रतियोगिता की भावना को बढ़ाया दिया।

(12) पराधिनता की भावना :—

रीतिकाल में आचार्यत्व की स्पर्धा, दरबारी वातावरण, महिलाओं की विलासिता का जीवन आदि वातावरण में सामान्य लोगों के मन में एक पराधिनता की भावना निर्माण हो चुकी थी।

(13) विविधमुखी साहित्य :—

रीतिकाल भारतीय संस्कृति और साहित्य की दृष्टि से पुनर्जीवन का काल है। इस काल में विषयों के ग्रंथ मिलते हैं। ज्योतिष, कामशास्त्र, राजनीति, पाकशास्त्र, सुरापान आदि।

(14) जीवन-दर्शन :—

रीति काव्य की सबसे महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है यथार्थ जीवन के प्रति गहरी अभिरुची। इस काल के कवि का मुख्य उद्देश्य है जीवन और यौवन के वास्तविक और रमणीय स्वरूप का चित्रण करना। उसके बीच-बीच में आई हुई आध्यात्मिकता या तो परंपरागत संस्कारवश आई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'बिहारी सतसई' रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जा सकती है तथा घनानंद, देव, सेनापति, पद्माकर जैसे सशक्त कवियों संपन्न रीतिकाल निश्चित रूप से हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काल है

दयानंद कला महाविद्यालय
पदव्युत्तर
अंतर्गत वाचणी पर
वर्ग
हजेरी क्र
दिनांक

PAGE No.
DATE

रीतिमुक्त काव्य का सामान्य परिचय

→ हिंदी साहित्य के रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के अंतर्गत वे कवि आते हैं जिन्होंने शास्त्रीय नियमों, लक्षण-ग्रंथों और दरबार की बाध्यताओं से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से काव्य की रचना की है।

विशेषताएँ :—

(1) शास्त्रीय नियमों से मुक्ति :—

इन कवियों ने काव्य-शास्त्र के बंधनों, छंद-अलंकार के नियमों और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा स्वीकार नहीं किया है। पूरी स्वच्छंदता से रीतिमुक्त कवियों ने अपनी कविता लिखी है।

(2) वैयक्तिक प्रेम :—

इनका प्रेम वर्णन किसी अन्य नायक-नायिका या पौराणिक प्रसंग पर आधारित नहीं था, बल्कि इनके खुद के जीवन की सच्ची और निजी प्रेमानुभूतियों पर आधारित था।
उदा — घनानंद - सुजान

(3) विरह की प्रधानता :—

इस काव्य में संयोग की तुलना में वियोग या पीड़ा का अत्यंत मार्मिक, गहरा और एकनिष्ठ चित्रण मिलता है। प्रेयसी ने प्रेम को ठुकरा भी दिया है, फिर भी प्रेमी अपनी प्रेयसी से प्रेम करता है।

दयानंद कला महाविद्यालय
पदव्युत्तर
अंतर्गत चाचणी पर्व
वर्ग.....
हजेरी क्र.....
दिनांक.....

का उल्लेख किया है पर नामोल्लेख मात्र से उन्हें भक्त कवि कहना भूल है।

(9) प्रकृति-चित्रण :—

रीतिकाल में प्रकृति कहीं सजीव रूप में चित्रित नहीं हुई है। प्रकृति का इन कवियों ने उद्दीपन रूप में चित्रण किया है। सेनापति की कविता में कहीं-कहीं उद्दीपन रूप में प्रकृति-चित्रण मिलता है।

रीतिमुक्त कवि :—

(1) घनानंद :— रीतिमुक्त कवियों में स्वच्छंदतावादी कवियों का काव्य ही विशेष उल्लेखनीय है। इन्हें रीतिमुक्त शृंगारी कवि भी कहा जाता है। घनानंद के लिखे ग्रंथों के नाम हैं — सुजान सागर, विरहलीला, रसकेलीवल्ली, लोकसार, कृपाकाण्ड। इनके अतिरिक्त इनके द्वारा रचित कवित्त और सवैये भी मिलते हैं जो विभिन्न संग्रहों में संकलित हैं। घनानंद ने फुटकल रूप में लगभग 400 सवैये कवित्त लिखे हैं। घनानंद द्वारा रचित कृष्णभक्ति संबंधी एक ग्रंथ छतरपुर के राजपुस्तकालय में सुरक्षित है।

(2) आलम :— रीतिमुक्त धारा के दूसरे प्रमुख कवि आलम हैं। ये औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के आश्रित

PAGE No.
DATE

कवि थे। इन्होंने मुक्तक शैली में 'आत्मकेलि' नामक ग्रंथ की रचना की है।

(3) **बोधा :** — बोधा भी बड़े रसिक जीव थे। वे पन्ना के सुभान नामक वेश्या पर आसक्त थे। प्रेम की पीर की स्वानुभूत व्यंजना करने में वे बड़े कुशल थे। 'विरहवारीश' और 'इश्कनामा' नामक दो रचनाएं लिखी।

(4) **ठाकुर :** — ठाकुर का इत्तिवृत्त शुक्लजी ने लिया है। इनमें से तीसरे, ठाकुर बुन्देलखण्डी 'ठाकुर' थे जो जाति के भाट थे। ये रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। इनके दो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं — 'ठाकुर ठसक' और 'ठाकुर शतक'। इनके काव्य में बुंदेलखण्ड में प्रचलित कहावतों एवं मुहावरों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है रीतिमुक्त काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। प्रेम की पीर के गायक इन कवियों ने प्रेम के उदात्त स्वरूप से लोगों को परिचित कराया तो दूसरी ओर रीतिबाह्यता चमत्कारप्रियता से कविता को मुक्त कर दिखलाई। भाषा की लाक्षणिक शक्ति का प्रयोग करके इन्होंने अनुभूति को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया। निश्चय ही घनानंद हिंदी के महान कवियों में से एक हैं जो रीतिमुक्त धारा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

दयानंद कला महाविद्यालय
पदव्युत्तर PAGE NO. DATE
अंतर्गत चाचणी
वर्ग.....
हजेरी क्र.....
दिनांक.....

रीतिबद्ध का सामान्य परिचय

→ रीतिबद्ध काव्य रीतिकाल की एक काव्यधा है जिसमें कवियों ने काव्यशास्त्र के नियमों (लक्षण ग्रंथों) का कठोरता से पालन करते हुए लक्षण और उदाहरण दोहा में कविताएँ रचीं।

रीतिबद्ध काव्य की विशेषताएँ :—

① काव्यशास्त्रीय नियमों की प्रधानता :—

इन कवियों ने पहले रस, छंद, अलंकार और शब्द शक्तियों के नियम बताए और फिर उनके उदाहरण प्रस्तुत किए।

② शृंगार रस की प्रधानता :—

इस धारा के केंद्र में मुख्य रूप से शृंगार रस रहा है जिनमें वियोग और संयोग रस का विस्तृत चित्रण मिलता है नायिका का नख-शिख चित्रण भी मिलता है।

③ नायिका भेद :—

नायिका के विभिन्न प्रकारों (स्वकीया और परकीया) तथा उसके अंगों सौन्दर्य का सूक्ष्म व अलंकारिक वर्णन किया गया है।

PAGE No.
DATE

(4) आचार्यत्व की होड़ :—

रीतिबद्ध कवियों को राजा के दरबार में कवि होने के लिए प्रयत्न करना पड़ता था किसी राजा के दरबार में कवि पद आसानी से नहीं मिलता था कवि बनने के बाद आचार्यत्व पद प्राप्त करने के लिए होड़ लगी रहती थी।

(5) ब्रजभाषा की प्रधानता :—

रीतिबद्ध काव्यधारा की अभिव्यक्ति का माध्यम अत्यंत परिमार्जित, मधुर और सशक्त ब्रजभाषा है ब्रजभाषा में ही इन्होंने अपनी कविता प्रस्तुत की है।

(6) आश्रयदाताओं की प्रशंसा :—

रीतिकाल के अधिकांश कवि दरबारी कवि थे। राजा की वीरता, शौर्य और पराक्रम का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन अपनी कविताओं में किया है। उनका वर्णन करने से राजा की ओर से उनको कुछ न कुछ मिलता था।

रीतिबद्ध कवि :—

(1) केशवदास :—

डॉ. नगेंद्र इन्हें रीतिकाल का प्रवर्तक मानते हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ — रसिकप्रिया, कविप्रिया, रामचंद्रिका, विज्ञान-गीता आदि हैं।

केशव की कविता में अलंकरण, चमत्कार प्रदर्शन एवं पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रधानता है इनकी कविता में विलष्टता आ गई है, जिसके



उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है।

(2) चिंतामणि :—

आचार्य रामचंद्र शुक्ल इन्हें रीतिबद्ध काव्यधारा का प्रवर्तक मानते हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना - 'कविकुलकल्पतरु' है।

(3) मतिराम :—

मतिराम रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि हैं। कवि भूषण और चिंतामणि के भाई थे। उनके कृतियों के नाम है — ललित ललाम, रसराज, फूलमंजरी, सतसई, साहित्यसार आदि है।

(4) देव :—

कवि देव का पूरा नाम देवदत्त था। देव को अच्छा, उदार आश्रयदाता नहीं मिला था। देव ने 72 ग्रंथों की रचना की। भाव विलास, भवानी विलास, रस विलास, देव शतक, जाति विलास, अष्टयाम आदि।

(5) कवि भूषण :—

यह एकमात्र ऐसे कवि है जो उन्होंने अपनी कविता का विषय श्रृंगार न लेके वीर रस लिया है। शौर्य, पराक्रम और वीरता का वर्णन अपने काव्य में किया है।

शिवाजी महाराज और महाराज छत्रसाल के दरबार में वे कवि रूप में थे। उनकी कविता को देखकर उन्हें छत्रसाल राजा ने 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी। उनके ग्रंथ हैं — शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।

(6) पद्माकर :— रीतिकाल के कवियों में पद्माकर का नाम आदर से लिया जाता है। वे सबसे लोकप्रिय कवि हैं। रीतिकाल के अंतिम चरण के कवि हैं। उनकी रचनाएं — जगविनोद, पद्माभरण, गंगा लहरी, कवि पच्चीसी आदि।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है कि रीतिबद्ध काव्य लक्षण ग्रंथों पर लिखा गया था। जो नियम थे उन्हीं नियमों के आधार पर कविता लिखी गई। रीतिबद्ध कवि रीति के बंधन में बंधे हुए थे।

रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख विशेषताएं (प्रवृत्तियाँ)

- **लक्षण-ग्रंथों की अनुपस्थिति:** इन कवियों ने संस्कृत काव्यशास्त्र के नियमों पर आधारित कोई शास्त्रीय या लक्षण-ग्रंथ नहीं लिखे, बल्कि स्वतंत्र रूप से काव्य की रचना की। Jamuni Lal College, H...
- **श्रृंगार रस की प्रधानता:** इस काव्य में मुख्य रूप से श्रृंगार रस (संयोग और वियोग दोनों पक्षों) का चित्रण किया गया है। संयोग में नायक-नायिका के सौंदर्य और प्रेम-लीलाओं का वर्णन मिलता है। YouTube +1
- **मुक्तक शैली का प्रयोग:** रीतिसिद्ध कवियों ने प्रबंध काव्य की तुलना में मुक्तक शैली को अपनाया। इनकी रचनाएं छोटे-छोटे दोहों और छंदों में होती हैं, जो गागर में सागर भरने जैसी होती हैं। YouTube · Magnet ... +1

- **भक्ति, नीति और ज्ञान का समन्वय:** श्रृंगार के साथ-साथ इनकी रचनाओं में भक्ति, नीति, उपदेश और वैराग्य के तत्व भी सहज रूप से देखने को मिलते हैं।
- **अलंकारों और सौंदर्य का प्रयोग:** इसमें नायिकाओं के नख-शिख सौंदर्य, शरीर की चमक-दमक और अलंकारों का सुंदर तथा चमत्कारी प्रयोग किया गया है।
- **ब्रजभाषा का प्रभुत्व:** इस धारा के संपूर्ण साहित्य की भाषा मधुर और परिमार्जित **ब्रजभाषा** रही है।
- **स्वानुभूति और स्वाधीनता:** रीतिबद्ध कवियों की तरह ये राजाओं के यहाँ नियम-बद्ध होकर लक्षण लिखने के लिए बाध्य नहीं थे, इसलिए इनके काव्य में अधिक स्वाभाविकता और व्यक्तिगत अनुभूति दिखाई देती है।

रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि एवं रचनाएं

- **बिहारी:** रीतिसिद्ध काव्य के सर्वोच्च और प्रतिनिधि कवि।
    - *प्रमुख रचना:* **बिहारी सतसई** (जिसमें लगभग 700 दोहे हैं) Google +2

- **सेनापतिः** प्रकृति वर्णन और श्रृंगार के श्रेष्ठ कवि।
    - *प्रमुख रचना:* **कवितरत्नाकर** और **काव्यकल्पद्रुम**
- **रसनिधिः**
    - *प्रमुख रचना:* **रत्नसाह हजारा, रसनिधि सागर**
- **निवाजः**
    - *प्रमुख रचना:* **शकुंतला नाटक**
- **बेनी कविः**
    - *प्रमुख रचना:* **बेनीसतसई**

पदव्युत्तर
अंतर्गत भाषणी पर्व
वर्ग.....
हजेरी क्र.....
दिनांक.....

प्रकरण = 4

कवि भूषण

महाकवि भूषण रीतिकाल के एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने श्रृंगारिक रचनाओं की प्रधानता वाले इस काल में ओज और वीर रस की रचनाएं की।

1. **जन्म :—** इ.स. 1613 को उत्तर प्रदेश के कानपुर जिल्हे के 'तिकवांपुर' गांव में हुआ। उनका मुल नाम 'पतिराम' या घनश्याम था।

(2) **परिवार :—** वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। चिंतामणि, मतिराम, ~~नील~~ नीलकंठ कवि भूषण के भाई थे।

(3) **उपाधि :—** चित्रकूट के राजा रुद्रपाल सोलंकी ने उनकी कविता पर प्रसन्न होकर उन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी थी।

(4) **आश्रयदाता :—** छत्रपती शिवाजी महाराज और महाराज छत्रसाल के दरबारी कवि 54 में उनके दरबार में रहते थे।

(5) मृत्यु :— सन् 1715 ई. को कवि भूषण की मृत्यु हो जाती है।

साहित्यिक परिचय :—

(1) प्रमुख रचनाएँ :—

1. शिवराज भूषण :— शिवाजी महाराज के शौर्य, पराक्रम और वीरता का वर्णन है।

2. शिवा बावनी :— 52 छंदों में शिवाजी के पराक्रम का वर्णन है।

3. छत्रसाल दशक :— 10 छंदों में महाराजा छत्रसाल का यशोगान किया है।

(3) साहित्यिक विशेषताएँ :—

1. रीतिकाल के अनूठे कवि :—

रीतिकाल के सभी कवियों ने शृंगार रस, नायिका भेद आदि का वर्णन अपनी कविताओं में किया है मगर कवि भूषण ही ऐसे कवि है जिनकी कविता में सिर्फ वीर रस, पराक्रम, शौर्य का मिश्रण किया है।

2. राष्ट्रप्रेम :— इनकी कविताओं में हिंदू जाति के प्रति गौरव और मुगलों के प्रति आक्रोश दिखाई देता है।

(5) मृत्यु :— सन् 1715 ई. को कवि भूषण की मृत्यु हो जाती है।

साहित्यिक परिचय :—

(1) प्रमुख रचनाएँ :—

1. शिवराज भूषण :— शिवाजी महाराज के शौर्य, पराक्रम और वीरता का वर्णन है।

2. शिवा बावनी :— 52 छंदों में शिवाजी के पराक्रम का वर्णन है।

3. छत्रसाल दशक :— 10 छंदों में महाराजा छत्रसाल का यशोगान किया है।

(2) साहित्यिक विशेषताएँ :—

1. रीतिकाल के अनूठे कवि :—

रीतिकाल के सभी कवियों ने शृंगार रस, नायिका भेद आदि का वर्णन अपनी कविताओं में किया है मगर कवि भूषण ही ऐसे कवि है जिनकी कविता में सिर्फ वीर रस, पराक्रम, शौर्य का चित्रण किया है।

2. राष्ट्रप्रेम :— इनकी कविताओं से हिंदू जाति के प्रति गौरव और मुगलों के प्रति आक्रोश दिखाई देता है।

3. ब्रजभाषा :— इनकी रचनाओं की भाषा ब्रजभाषा है उसमें संस्कृत, अरबी, फारसी और उर्दू के शब्दों का प्रयोग मिलता है।

4. अलंकार :— अनुप्रास और यमक अलंकारों का प्रयोग उनके काव्य में मिलता है। अलंकारों के माध्यम से शब्दों का अत्यंत ललित और सजीव प्रयोग उनकी भाषा में मिलता है।

5. रस :— ओतप्रोत है। उनकी कविता 'वीर रस' से शिवाजी महाराज और महाराजा ~~छत्र~~ छत्रसाल की वीरता का वर्णन वीर रस में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि भूषण रीतिकाल के कवि है। उनकी कविता का विषय वीर रस से युक्त वीरता का वर्णन उनकी कविता में मिलता है। उनकी कविता में देशप्रेम दिखाई देता है।

2. संत मीराबाई

PAGE No.
DATE

संत मीराबाई भक्तिकाल की सगुण धारा की प्रमुख कृष्ण भक्त कवयित्री थी।

(1) **जन्म :—**

सन 1498 ई. राजस्थान के मेड़ता के पास 'कुड़की' नामक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम रतन सिंह राठौड़ तथा माता का नाम वीर कुमारी था।

(2) **गुरु :—**

संत मीराबाई के गुरु रैदास या रविदास थे।

(3) **विवाह :—**

इनका विवाह सन 1516 ई. में मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुंवर भोजराज के साथ हुआ था।

(4) **जीवन का संघर्ष :—**

विवाह के कुछ वर्षों बाद ही पति भोजराज का निधन हो गया। राजपरिवार की परिपाटी के विपरीत जाकर उन्होंने मंदिरों में साधु-संतों के बीच बैठना और कृष्ण-भक्ति करना जारी रखा। जिसके कारण उन्हें ससुराल पक्ष की तरफ से अनेक यातनाएं और विरोध सहना पड़ा।

(5) **निधन :—**

सन 1547 ई. के आसपास द्वारका (गुजरात) के रणछोड़ जी मंदिर में उनका निधन माना जाता है।

साहित्यिक परिचय :—

(1) **भक्ति-भावना :—** मीराबाई की भक्ति 'माधुर्य भाव' की थी। श्रीकृष्ण को अपना पति और आराध्य ~~मानती~~ मानती थी।

(2) **रचनाएँ :—**

1. मीराबाई की पदावली
2. नरसी जी रो माहेरो
3. राग सोरठ
4. गीत गोविंद की टीका
5. राग सोरठा के पद
6. गर्वागीत आदि

(3) **भाषा-शैली :—** मीराबाई की काव्य की भाषा ब्रजभाषा है। उनकी भाषा में राजस्थानी, पंजाबी और गुजराती भाषाओं के शब्द उसमें आते हैं। गेय पद शैली उनकी कविता में मिलती है।

(4) **काव्य की विशेषताएँ :—**

उनके पदों में गहरी आत्मता, विरह-वेदना, आत्म-समर्पण, अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। इनके भजनों का संगीत और सरलता आज भी पूरे उत्तर भारत में अत्यंत लोकप्रिय है।

इस प्रकार मीराबाई एक संत की जो कृष्ण की भक्ति करती थी।

अमीर खुसरो

आदिकाल का प्रमुख कवि अमीर खुसरो को याद किया जाता है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ लिखी। इस प्रकार अमीर खुसरो को खड़ीबोली का पहला कवि माना जाता है।

1. **जन्म :—** अमीर खुसरो का जन्म 1255 एटा जिले के पटियाली गाँव में हुआ था। उनका पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था।

2. **परिवार :—** पिता – अमीर सैफुद्दीन महमूद (तु
माता – बीबी दौलत नाज़ (भारतीय मुस्लि
गुरु – सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया

3. **उपाधियाँ :—** उन्हें तूती-ए-हिंद (भारत का तोत
खुसरो-ए-शायरा और खड़ीबोली का प्रथम कवि
माना जाता है।

4. **शासनकाल :—** उन्होंने अपने दीर्घकाल में दि
सल्तनत के कई सुल्तानों (बलबन से लेकर गयासु
तुगलक तक करीब 11 शासकों) का शासन देखा

5. **भाषा :—** वे फारसी, अरबी और हिंद
(हिंदी और खड़ीबोली) के प्रकांड विद्वान थे।

6. **संगीत योगदान :—**

Page No.
Date :

उन्हें भारतीय संगीत में कव्वाली, सितार और तबला के प्रवर्तक का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने फारसी और भारतीय रागों का सुंदर मिश्रण किया।

(7) प्रमुख रचनाएँ :—

① हिंदी – खालिकबारी (शब्दकोश), पहेलियाँ, मुकरियाँ और दोहे.

② फारसी मसनवी ग्रंथ :—

किरान-उस-सादैन, मिफ्ताह-उल-फुतूह, अफजाल-उल-फवायद, नूह सिपहर, आशिका और उनकी अंतिम प्रमुख रचना 'तुगलकनामा'।

(8) काव्य की विशेषताएँ :—

① भाषा की विविधता
② लोक-साहित्य और मनोरंजन
③ सूफी दर्शन
④ सांस्कृतिक समन्वय

(9) निधन :—

की मृत्यु हो जाती है। 1325 दिल्ली में अमीर खुसरो

Date / /

Page No.

Date :

संत नामदेव

संत नामदेव महाराज वारकरी संप्रदाय के प्रमुख संत, कवि और भक्तिकाल के महान समाज सुधारक थे।

1. जन्म :— 26 अक्टूबर 1270 कार्तिक शुक्ल एकादशी. नरसी - वामणी, जिला हिंगोली. महाराष्ट्र.

2. परिवार :— माता - गोणाई देवी, पिता — दामाशेटी रेल्कूर, पत्नी — राधाबाई, गुरु — संत विसोबा खेचर., जाति — शिंपी.

3. आराध्य — भगवान श्री विठ्ठल (पांडुरंग, पंढरपुर).

4. समाधि :— 3 जुलाई 1350, (अयोदशी) विठ्ठल मंदिर की पायरी (सीढ़ी) पंढरपुर.

5. प्रमुख कार्य :— वारकरी संप्रदाय और भागवत धर्म का महाराष्ट्र से बाहर उत्तर एवं पंजाब तक प्रचार। उन्होंने लगभग 18 वर्ष पंजाब के घुमान में रहकर 'हरिनाम' का प्रचार किया।

6. प्रमुख रचनाएँ :— मराठी में लगभग 2500 अभंग

(10)

Page No.
Date :

की रचना की जो 'संत नामदेव गाथा' में संगृहित है। हिंदी और पंजाबी में लगभग 100 से अधिक पदों की रचना की।

(7) **समाधान :—** संत नामदेव की वाणी का अत्यंत उच्च स्थान है। सिखों के पवित्र ग्रंथ 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में 18 विभिन्न रागों में उनके 61 पद और 3 श्लोक समाहित हैं।

(8) **काव्य की विशेषताएँ :—**

उनकी रचनाओं में सगुण और निर्गुण भक्ति का अद्भुत समन्वय मिलता है। उन्होंने जाति-पाँति, बाह्य आडंबर, कर्मकांड का कड़ा विरोध किया तथा सच्चे प्रेम और भक्ति का संदेश दिया।

(9) **भाषा :—** संत नामदेव की भाषा मराठी और हिंदी है।

निष्कर्षतः कह सकता है कि संत नामदेव महाराष्ट्र के थे। इन्होंने वारकरी संप्रदाय का प्रचार किया था।

Date / /
Page L&W

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. आदिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ बताइए।
2. सिद्ध एवं नाथ साहित्य का सामान्य परिचय बताइए।
3. संत काव्य की विशेषताएँ लिखिए।
4. कृष्ण भक्ति काव्य की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
5. रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ विवेचित कीजिए।
6. रीतिमुक्त काव्य का सामान्य परिचय बताइए।
7. अमीर खुसरो, कवि भूषण, संत मीराबाई का परिचय बताइए।